ISSN-2230-7540

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' काव्य में– स्वाधीन चेतना

Dr. Kulwant Singh

Hindi Department, M.M.P.G. College Fatehabaad

इतिहास की धारा के सामने वही टिक सकता है, जो इतिहास का निर्माण करने में यानी इतिहास की गति का प्रवर्तन करने में भाग लेता है। निराला के पास वह काव्यानुभव था, वह काव्य–चेतना थी और था काव्य–सृजन का वह इतिहास–बोध जिनके बूते पर कोई कवि कविता के इतिहास का निर्माण करता है। निराला ने हिन्दी–कविता के तात्कालिक वर्तमान के साथ ही भविष्य को भी दि"ाा दिखायी। इस का मुख्य कारण है कि निराला बिल्कुल शुरू से ही अत्यन्त सजग कालबोध से सम्पन्न थे । छायावाद के साथ विकसित होते हुए भी ये ठेठ छायावादी चेतना को लांध रहे थे। इसके सिवा अभी कर्म की अविराम धारा बहती हुई नहीं देख पड़ती। उस युग के कुछ प्रतिभा"ाली अल्प–वयस्क साहित्यिक प्राचीन ''गुरूडम'' के एकच्छत्र साम्राज्य में बगावत के लिए शासन–दण्ड ही पा रहे हैं, अभी उन्हें साहित्य के राजपथों पर साधिकार स्वतंत्र रूप से चलने का सौभाग्य नही मिला था। वे अभी हाथ पैर ही मार रहे थे ।

हिन्दी कविता में विविधता के प्रेरणा–स्त्रोत निराला

छायावादी कविता भाषा वि"ो"ाणों के आधार पर सौन्दर्य का स्वरूप ग्रहण करती है। निराला ने विकास को इस प्रक्रिया की सम्भावना देखी ही नहीं, बल्कि उस सम्भावना को घटित करने की दृष्टि से विविधापूर्ण जीवनानुभव के आधार पर कविता में भी विविधता का निर्माण किया। आमतौर से कौमार्य या युवावस्था में भा"ाा वि"ोषमयी होती है, पौढ़वस्था में भा"ाा क्रियात्मक होती है। निराला ने कविता और उसकी भाषा को वरेण्य कभी नहीं माना –क्रिया' के प्रति झुकाव होने के कारण ही वे छायावादी सीमा को लांघते हैं। लेकिन कविता या भाषा में क्रिया की प्रधानता जीवन की क्रिया"ाीलता के ही आधार पर

ISSN-2230-7540

कायम होती है। निराला का काव्य–संग्रह –राम–विराग' इहलोक–परलोक, परा–अपरा, स्थूल–सूक्ष्मया बाहर–भीतर दोनों से भरा–परा है। इसमें दोनों प्रकार की कविताएँ हैं। इस सम्बंध में प्रसिद्व आलोचक **रामविलास भार्मा** के अनुसार– '' निराला की कविता जिसमें एक ओर राग–रंजित धरती है 'रंग गई पग–पग घन्य धरा'– तो दूसरी ओर विराग का अंधकारमय आका"ा है – 'कभी नि"ाा उगलता गगन धन अंधकार।'' [1]

काव्य की मुक्ति के सजग प्रहरी निराला

इसके ऐतिहासिक दृष्टांत हैं। ऐसा ही कवि कह सकता हैं कि– ''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मुक्त–काव्य कभी साहित्य के लिए अनर्थकारी नही होता, प्रत्युत उससे साहित्य में एक प्रकार की स्वाधीनता चेतना फैलती है, जो साहित्य के कल्याण की ही मूल हेाती है।'' 'छंदों के शासन से अलग हो जाना' ही मुक्ति का अर्थ समझा जाता है। यह ठीक है कि यह वाक्यां"ा निराला के कथन का अंग है, लेकिन छंदो के शासन से अलग हो जाने को वे कविता की प्राथमिक मुक्ति मानते हैं, जो स्वागत या ढॉचागत मुक्ति है। कविता की वास्तविक मुक्ति निराला के लिए है ''साहित्य में एक प्रकार की स्वाधीन–चेतना का फैलाव।'' चेतना का सीधा सम्बंध साहित्य की किसी भी विद्या की रचना की अन्तर्वस्तु से होता है। निराला साहित्य में और साहित्य के नीचे समाज में भी स्वाधीन चेतना का फैलाव करना चाहते हैं। यहॉ यह ''स्वाधीन'' शब्द यों ही नहीं आ गया, वह सोच–समझ कर एक निर्दिष्ट उदे"य को ध्यान में रखकर लगाया गया है। यह शब्द यहॉ स्वाधीनता–संग्राम से आया है। छायवादी कविता के उद्य और विकास का भी सम्बंध स्वाधीनता–संग्राम से आया है और उस संग्राम में सक्रिय और गति"ाील स्वाधीन चेतना चारों तरफ फेल रही थी, साहित्य की भी विभिन्न विद्याओं में । उसी स्वाधीन चेतना की अभिव्यक्ति का एक रूप है 'छायावादी कविता में व्याप्त व्यक्ति– स्वातंत्रय की चेतना'। यह बात आज प्रायः सर्वस्वीकृत है।

निराला की स्वाधीनता चेतना व्यक्ति–स्वातंत्रय तक सीमित नही रहती

रीति–काव्य की परम्परा से चली आ रही रूपगत रूढ़ियों और बंधनों को तो सभी कवियों ने तोड़ा, अन्तर्वस्तु में भी प्रसाद, पंत, महादेवी आदि ने सामाजिक रूढ़ियों को स्वच्छंदता प्राप्त करने की दृष्टि से तोड़ा अथवा उन पर प्रहार किया। यह तो स्पष्ट है कि परतंत्र दे"ा में व्यक्ति–स्वातंत्रय भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के बिना नही मिल सकता। लेकिन मुख्य बात यह है कि कौन कहां खड़ा होकर स्वतत्रंता की बात करता है और किस के लिए । निराला के लिए '' वैदिक मंत्रों के गलत अर्थ की दासता से मुक्ति और पराधीन काल की बेड़ियों'' को तोड़ना समान रूप से जरूरी है। वे साफ कहती हैं '' इतनी बड़ी दासता–रूढ़ियों की पाबान्दी इस मंत्र के जपने वालों पर भी सवार है। जो मंत्रों की दासता नहीं तोड़ सकते वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई नहीं लड़ सकते हैं। बन्धनों को तोड़ने के लिए ''मुक्त ह्रदय मुक्त स्वभाव, आव"यक हैं। और फिर उनकी दि"ाा का भी देखिए –

सखि वसंत आया

ISSN-2230-7540

भरा हर्ष वन के मन,

नवोत्कर्ष छाया।''[2]

राष्ट्र की आजादी का आंदोलन, किया काल व निराला

निराला देख रहे थे और समझ गये थे कि राष्ट्रीय स्वतत्रंता के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका दे"ा की आम जनता अदा कर रही है। उस जनता में मजदूरी अरैर किसानों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए मजदूरों और किसानों की भूमिका से जुड़ने पर ही साहित्यक में ''क्रिया काल शुरू होता है। निराला का ऐतिहासिक महत्व यह है कि वे '' क्रिया काल आने का संकेत देते हैं और उसे लाने का उपक्रम भी करते हैं । यह इतिहास के साथ चलना नहीं, बल्कि इतिहास का निर्माण करने की पहल करना है। यही भूमिका है, जिसके कारण निराला के काव्य ने ऐसा विविधतापूर्ण ,विराट और गति"ाील स्वरूप प्राप्त किया कि वह हिन्दी कविता के आगामी विकास को भी प्रभावित कर सका। इस विकास धारा की विराटता का प्रमाण यह है कि निराला नागार्जुन, मुक्तिबोध जैसे नाम मिल कर आधुनिक कविता के छायावादोतर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

'' जागो फिर एक बार।

प्यारे जगति हुए हारे यह तारे तुम्हें

अरूण–पंख तरूण–किरण

खड़ी खोलती है द्वार–

जगो फिर एक बार।'' [3]

रूढ़ियों पर प्रहार करते निराला

निराला 'जुही की कली' में एक रूढ़ि को तोड़ते हैं, जो स्त्री–पुरूष या प्रेमी–प्रेमिका के सम्बंध की रूढ़ि हैं, तो 'विधवा' में दूसरी रूढ़ि को तोड़ते हैं, जो स्त्री की मर्यादा से सम्बन्धित हैं। रूढ़ियों को तोड़ने की यह प्रवृति आगे बढती है तो वे 'वह तोड़ती पत्थर' और 'भिक्षुक' जैसी कवितॉए लिखते हैं। इन कविताओं के माध्यम से वे उस समाज व्यवस्था पर चोट करते हैं, जिस के कारण एक स्त्री अट्टालिका बनाने के लिए पत्थर तोड़ने को मजबूर है और एक आदमी भीख मांगने को । यह निराला ही हैं, जिन्होनें 'मै' शैली अपनायी –कहने के बावजूद अपनी गति"ाील और व्यापक दृष्टि से तुरत 'देखा दुःखी एक निज भाई।' इस प्रक्रिया का अगला चरण यह है –

''दलित जन पर करो करूणा

छीनता पर उतर आए

ISSN-2230-7540

प्रभु तुम्हारी शक्ति अरूणा।'' [4]

वेदना का ऐसा जोर है कि कवि बैठा नही रह सकता, दौड़ कर 'दुखी एक निज भाई' के पास जाता है और उसे गले लगा लेता है। यह कृष्ण–सुदामा का मिलन नहीं, राम,–भरत का भी नहीं, यह समान रूप से दुःखी दो भाईयों का मिलन है। दुःखी किसानों का यही भाई जब बादल पर कविता लिखने लगता है तो उससे कहता है–

''जीर्ण बाहू है शीर्ण

तुझे बुलाता कृषक अधीर,

ऐ विप्लव के वीर ।

चूस लिया है उसका सार,

हाड़ मात्र ही है आधार,

ऐ जीवन के पारावार।''[5]

समाजिकता व प्रगतिशील–भावना के कवि निराला

निराला के काव्य–विकास को संवेदना या भावना में अंतर के आधार या दौर पर नहीं बाटा जा सकता। उनमें जो प्रवृतियॉ हैं, जो भावनाऍ हैं, वे शुरू से अंत तक हैं और उनका मूल स्वरूप सामाजिक तथा प्रगति"ाील हैं। रचना के प्रथम दौर में भी उन्होंने जुही की काली, माया, अधिवास जैसी रचनाऍ की, तो भिक्षुक, विधवा जैसी कविताऍ भी। इसलिए आगे चलकर सन् 1940 के आस–पास कुकरमुता, गर्म पकौड़ी और जल्द पैर बढाओ जैसी कविताऍ लिखते हैं। जाहिर है कि निराला की काव्य–चेतना शुरू से आखिर तक समाज और उसकी गति"ाीलता एवं परिवर्तन"ाीलता के सम्पृक है।

''सामाजिक परिवर्तन"ाीलता और निराला की काव्य–चेतना सर्जनात्मकता के बीच द्वन्द्वात्मक रि"ता हर अवस्था की रचनाओं में दिखायी पड़ता है। निराला–काव्य पर गौर करने के प्रसंग में यह देखना जरूरी है कि स्वयं निराला ने संसार और समाज को कैसे देखा, किस उदे"य से देखा ? इस प्र"न का उतर निराला की कविता के वस्तुगत वि"लेषण से जो मिलता है, वह ऊपर की बातो की पुष्टि करता है।''[6]

निराला ने जीवन और संसार को समग्रता में देखा है, उनके भविष्य की चिंता के साथ देखा है, व्यापकता और गति"ाीलता में देखा है और उसके भविष्य के बारे में कल्पना भी की है। यह कल्पना निराला के अनुभवों को सुन्दर और शक्ति"ाली बनाती है क्योंकि निराला इस जीवन और संसार को सुंदर और बेहतर बनाना चाहते हैं। उन्हें जीवन में जो संघर्ष करना पड़ा, जो विरोध झेलना पड़ा, वह केवल जीवन के लिए नहीं है, बल्कि जीविका, उनके ध्येय में होती तो शायद इतना तीखा

ISSN-2230-7540

संघर्ष और विरोध नहीं झेलना पड़ता। संसार, जीवन और कविता इन सब के बारे में अभिन्न कल्पना करने के कारण ही तो उनका जीवन संघर्षमय हो गया–

''जीवन चिरकालिक क्रंदन

मेरा अंतर वज्र कठोर,

देना ही भरसक झकझोर

तस नि"ाा न कभी हो भोर''[7]

जीवन की वास्तविकता के पक्षधर निराला

निराला की कल्पना आसमानी नहीं है, वह जीवन की वास्तविकता से उपतजी है। और वास्तविकता को नयी अवस्था पर ले जाने की संवेदन"ाीलता से सक्रिय होती है। इस प्रकार निराला के लिए कविता या साहित्य का सृजन वास्तव में जीवन और समाज को भी नये रूप में गढने का आयोजन है। जीवन और कविता की यह द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया निराला के काव्य–सौंदर्य के स्त्रोत है। उसके सौंदर्य का एक अंग जीवन की वास्तविकता में है तो दूसरा वास्तविकता को बदल कर सुदर बनाने की कल्पना से जुड़ा है। उनक` शब्द वास्तविकता और कल्पना के द्वन्द्व को संतुलित अभिव्यक्ति देने की सार्थक भूमिका अदा करते हैं। भाषा की यह सार्थक भूमिका निराला के काव्य को शक्ति प्रदान करती है। हिन्दी कविता में हम निराला की सर्जना के जरिये अच्छी तरह महसूस करते हैं कि यथार्थ से अधिक शक्ति"ाली होता है यथार्थ का संवेदनापूर्ण और कल्पनाप्रवण चित्रण । हिन्दी भाषा की पूरी अभिव्यंजना शक्ति समग्र रूप में सबसे पहले निराला की कविताओं में ही दिखायी पड़ती है। श्रेष्ठ कविताओं को छोड़ भी दे ंतो 'सरस्वती वन्दना' और 'राजे ने रखवाली की' जैसी कविताओं में भी भाषा की शक्ति का एहसास होता है ।

''राजे ने अपनी रखवाली की,

किला बनाकर रहा,

बड़ी–बड़ी फौजे रखी,

चापलूस कितने सामंत आए।

मतलब की लकड़ी पकड़े हुए

कितने ब्राहाण

पोथियों में जनता को बांधे हुए।''[8]

ISSN-2230-7540

राष्ट्रभाशा हिन्दी के भविश्यवक्ता निराला

सन् 1924 में मु"ाी नवजादिका लाल ने एक लेख में कहा था कि निराला उस हिन्दी का कवि है, जो भारत की राष्ट्रभाषा होने वाली है। स्वयं निराला ने 'परिमल' की भूमिका में भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्वीकृति के पक्ष में यह तर्क दिया था कि उसके बोलने वालों की तादाद सबसे अधिक हैं, बल्कि यह कहा जाता कि हिन्दी अन्तर्वस्तु की दृष्टि से समृद्व होने वाली है।''[9]

गतिशील काव्य–चेतना के कवि निराला

निराला गति"ाील काव्य–चेतना के कवि हैं। उनके यहॉ कुछ भी कही भी स्थिति मात्र में नहीं है, उनकी काव्य–चेतना गति"ाील है, कविता की रचना–प्रक्रिया गति"ाील है, कविता में चित्रित वस्तुऍ गति"ाील हैं। उनकी भाषा में तीव्र गति"ालता है, यही कारण है कि उनकी रचना–प्रक्रिया अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढती है, रास्ते में पड़ने वाले अवरोधों को हटाती हुई, बंधनों को तोड़ती हुई रूढियों को छिन्न–भिन्न करती हुई आगे बढती जाती है, इस गति"ालता के कारण ही उनमें लगातार नयापन आता रहा है–

पहाड़ से उठे सर ऐंठ कर बोला कुकुरमुता

अबे सुनबे गुलाब,

भूल मत जो पाई खु"ाबू रंगों–आब,

खून चूसा खाद का तूने अ"िाष्ट,

डाल पर इतराता केपिटेलिस्ट ।

मली कर रखा, सहाया जाड़ा–घाम।''[10]

गतिशीलता निराला की काव्य–चेतना को विविधतापूर्ण बनाती है

यों तो निराला की काव्य–चेतना में दि"ाागत विविधता भी है, इसलिए वहॉ पाठकों को यह तय करना पड़ता है कि उनकी मुख्य दि"ाा क्या है? निराला की काव्य–चेतना प्रबुद्व और एतिहासिक रूप से समद्व एवं सजग पाठकों की अपेक्षा रखती है, निराला अपने काव्य–विकास के तीसरे चरण में धर्म या भक्ति–भवना से प्रभावित गीत लिखने लगे–

मेरा अधिवास कहॉ हैं?

क्या कहा? रूकती है गति जहॉ

ISSN-2230-7540

भला इस गति का शेष

संभव है क्या ?

करूणा स्वर का जब तक मुझमें रहता आवेष?''[11]

उपर्युक्त 'राग–विराग' के अध्ययन से सिद्व होता है कि महाकवि निराला की चेतना स्वाधीन, उन्मुक्त एवं बंधनरहित गगनविहारिणी थी। उन्होंने कभी भी स्थापित वादों, मतों, धाराओं या मान्यताओं की चिंता नहीं की। शायद इसलिए उन्हें बहुत कष्ट, पीड़ा, उत्पीड़न, उपेक्षा एवं उपहासों का सामना करना पड़ा। मौलिक प्रतिभाओं के साथ सदा से ऐसा व्यवहार होता आया है।

संदर्भ ग्रंथि

1 डॉ0 रामविलास शर्मा, राग–विराग की भूमिका, पृ0 17

2 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, राग–विराग, पृ0 44

3 उपरिवत्, पृ0 50

4 उपरिवत्, पृ0 131

5 उपरिवत्, पृ0 56

6 परिषद् पत्रिका वर्षः 34, अंक–पृ0 73

7 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, राग–विराग, पृ0 60

8 उपरिवत्, पृ0 40

9 परिषद् पत्रिका वर्षः 34, अंक1–4 पृ0 74

10 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, राग–विराग, पृ0 145

11 उपरिवत्, पृ0 62

IGNITED MINDS Journals